आभार

सर्वप्रथम मैं परमपिता परमेश्वर को प्रणाम करती हूँ । जिनकी परम कृपा से मुझे भारतीय नृत्यकला में कार्य करने का अमूल्य अवसर प्राप्त हुआ । भगवान के प्रति आस्था, विश्वास एवं उनकी कृपा के बिना कोई भी कार्य संभव नहीं हो सकता । इसलिए भगवान को में प्रणाम करती हूँ, वन्दन करती हूँ जिनकी कृपा दृष्टि से मुझे इस कलाक्षेत्र में कार्य करने हेतु बौद्धिक एवं मानसिक रूप से सक्षम बनाया ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूर्णतः सफल एवं साकार रूप प्रदान करने के लिए मैं सर्वप्रथम मेरी शोध निर्देशिका एवं गुरू, डॉ. स्मृति वाघेला (सहायक आचार्य, नृत्य विभाग, महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा) जी का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ । जिनके निर्देशन में मैं यह बड़ा कार्य सफलता से कर सकी । मेरी शोध का विषय ''भरत के नाटयशास्त्र तथा भारतीय योग का पारस्परिक संबंध एक तुलनात्मक अध्ययन'' है जो कि अपने आप में अत्यंत गहन है । आपने न केवल नृत्य की इस विख्यात विद्या से अवगत करवाया बल्कि इस महत्वपूर्ण कार्य में अपना बहुमूल्य समय एवं सतत् मार्गदर्शन के साथ–साथ प्रत्येक क्षण प्रोत्साहन देती रही । जिससे मेरा यह कार्य सरलतापूर्वक सफल हो सका । आपके मार्गदर्शन के बिना इस विषय पर कार्य करना सम्भव नहिं था अतः आपके प्रति सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ ।

भारतीय नृत्यकला जैसे विशुद्ध क्षेत्र में मुझे प्रवेश कराने एवं प्रारंभ से मुझे आज यहाँ तक पहुँचने योग्य बनाने में मुख्य भूमिका के रूप में मेरे गुरू श्रीमति जुथिका महेन, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, नृत्य विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, जिनके अथाक प्रयास, मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं शिक्षा के कारण मैं आज नृत्य विषय में शोध कार्य कर सकी । मैं आपको कोटि–कोटि वन्दन करती हूँ । आपने मुझे मेरा स्वप्न साकार करने में सहायता की ।

मैं आभारी हूँ अपने संकाय प्रमुख एवं नृत्य विभागाध्यक्ष प्रो. गौरांग भावसारजी एवं संकाय के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग करने वाले तमाम गुरूजनों का जिनके निःस्वार्थ सहयोग से यह कार्य कुशलतापूर्वक पूर्ण हो सका ।

मैं आभारी हूँ डॉ. किरण सिंगलोतजी तथा श्री भीखुभाई पंचालजी की तथा योगनिकेतन, वड़ोदरा के सभी अध्यापको की जिन्होंने मुझे योग के विषय में ज्ञान दिया ।

मैं आभारी हूँ डॉ. अश्विनीकुमारजी (गायन विभाग, एम.एस.युनिवर्सिटी, वड़ोदरा) का जिन्होंने मुझे यह शोध कार्य को संकलित करने में सहायता की और श्री डॉ. हरीश व्यासजी (भूतपूर्व, विभागाध्यक्ष, नाटय विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वड़ोदा) का ।

''माता–पिता चरणकमलेभ्यो नमः ।।

मेरे जीवन के हर एक चरण में तथा मेरी नृत्य की कारकीर्दि में मेरी सफलता का संपूर्ण श्रेय मेरे माता–पिता को जाता है । उनके विश्वास और उनके आशिर्वाद के कारण ही मैं जीवन का हर कार्य सिद्ध कर पाई हूँ । मेरे स्वर्गवासी पिता श्री जितेन्द्रभाई कनैयालाल शाह और मेरी माता

श्रीमति मायाबेन जितेन्द्रभाइॅ शाह के चरण कमलों मैं हृदयपूर्वक प्रणाम करती हूँ जिनके नि :स्वार्थ प्रेम एवं प्रोत्साहन के कारण मैं यहाँ तक पहुँच पाई हूँ । यहाँ मैं मेरे स्वर्गवासी चाचा श्री बंशीधर कनैयालाल शाह तथा प्रध्युमन कनुभाइॅ भट्ट की भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझ पर विश्वास कर हर असंभव कार्य को पूर्ण करने के लिए आर्थिक एवं आत्मिक सहायता की । मैं आभारी हूँ मेरे बेटे ध्रुव उकाभाई बारड की जिसने अपने प्यार से मुझमें विश्वास बढ़ाया । मैं आभारी हूँ मेरे सारे परिवार की जिन्होंने अपना प्रेम और अपनी ममता मुझ पर बरसाई ।

मैं आभारी हूँ उन सभी नृत्यकला के विद्वानों की एवं योग के विद्वानों की जिनके साक्षात्कार एवं बहुमूल्य सुझाव और मार्गदर्शन से मुझे यह कार्य पूर्ण करने का स्त्रोत प्राप्त हुआ । मैं विशेष आभारी हूँ डॉ. किरण सिंगलोतजी, श्री भीखु पंचालजी, श्री निखील खांडेकरजी, श्रीमति रोहिणी श्रीराम खांडेकरजी की जिन्होंने इस कार्य के हर पड़ाव को पूर्ण करने में आधार स्तंभ का कार्य किया । मैं आभारी हूँ अपने जीवन से जुड़े उन सभी मित्रों की जिन्होंने इस कार्य में मेरा प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से साथ दिया । डॉ. बिनल राणा (योग फोटोग्राफी), हर्षिता राणा, मधुरा खांडेकर, नीधी खांडेकर (गायकवाड़), नागराज यादव, श्री तुषार पाठक (फोटोग्राफी), डॉ. प्रियंबदा तिवारी एवं जाने–अनजाने रूप से अन्य सभी मित्र इत्यादि की मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस शोध कार्य को पूर्ण करने में सहयोग किया ।

मैं हमारे संकाय के पुस्तकालय के श्रीमति कोकिला राज जी की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे अलभ्य पुस्तकें प्राप्त करवाई । मैं आभारी हूँ युनिवर्सिटी स्टाफ की श्रीमति सोनल जादवजी की जिन्होंने प्रशासनिक कार्यो में अविरत मार्गदर्शन दिया ।

अंत में मैं इस शोध कार्य की साकार रूप प्रदान हेतु श्री देवांगभाई चौहान का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने पूरे टंकण कार्य को साकार करने में मेरे साथ अहम् भूमिका निभाई एवं मुझे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया । यह अत्यंत चुनौती भरा एवं कठिन कार्य रहा, जिसके मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ ।